RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक : 3
सृष्टि संवत् 19608531114
21 अप्रैल 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 3, 18/21 अप्रैल 2013 तदनुसार 9 वैशाख सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

सुदर्शन शर्मा, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि वाल्मीकि ने मुनि श्रेष्ठ नारद से पूछा, ''भगवन! इस समय इस संसार में गुणी, शूरवीर, धर्मज्ञ, सत्यवादी और दृढ़प्रतिज्ञ कौन है ? सदाचारी, सब प्राणियों का हित करने वाला, प्रियदर्शन, धैर्ययुक्त तथा कामक्रोधादि शत्रुओं को जीतने वाला कौन है ? मुझे यह जानने की प्रबल अभिलाषा है। महर्षे! आप इस प्रकार के श्रेष्ठ पुरुष के जानने में समर्थ हैं, अत: मुझे बताइए।''

महर्षि वाल्मीकि के ऐसा पूछने पर मुनि श्रेष्ठ नारद ने कहा, ''महर्षे! आपने जिन गुणों का वर्णन किया है वे बहुत श्रेष्ठ और दुर्लभ हैं तथा उन सबका एक ही व्यक्ति में मिलना कठिन है, फिर भी आप द्वारा पूछे गए सभी गुणों से युक्त एक व्यक्ति हैं जो इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न हुए हैं और 'राम' के नाम से विख्यात हैं। वे अति बलवान, धैर्ययुक्त, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, प्रियवक्ता, शत्रुओं के नाशक, धर्म के जानने वाले, सत्यवादी, प्राणियों के हित में तत्पर, वेदों के ज्ञाता, गम्भीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमालय के सदृश, पराक्रम में विष्णु के तुल्य, क्रोध में कालाग्नि के सदृश, क्षमा में पृथिवी के सम, दान करने में कुबेर और सत्य बोलने में दूसरे धर्म के समान हैं।''

श्री रामचन्द्र जी का भारतीय संस्कृति, साहित्य, इतिहास परम्परा में एक गौरवपूर्ण स्थान है। श्री राम के बिना इसकी कहानी अधूरी है। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम रामकथा का निरूपण किया है, जो कि श्रीराम के समकालीन थे। आज राम कथा सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं में जहां रूपान्तरित है वहां विदेशी भाषाओं में भी प्राप्त होती है। महर्षि वाल्मीकि ने श्रीराम को धर्म का साक्षात रूप कहा है अर्थात् उन्होंने धर्म की सब व्यवस्थाओं को अपने जीवन में उतारा था। जिसका सीधा सा भाव यह है कि यदि हम धर्म को स्पष्ट रूप में समझना चाहते हैं या प्रत्यक्ष देखना चाहते हैं, तो धर्म के समग्र रूप को हम श्रीराम के जीवन में चरितार्थ हुआ प्राप्त करते हैं। इसलिए श्री राम चन्द्र जी को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम कहा जाता है।

ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म चैत्र सुदी नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र में अयोध्या में हुआ। हमारे देश में मर्यादा पुरुषोत्तम का जन्मदिन प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से मनाया जाता है और यह दिन राम नवमी के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

इस बार हम 19 अप्रैल 2013 शुक्रवार को श्रीराम का जन्मदिन मना रहे हैं। सारे देश में इसकी तैयारियां आरम्भ हो गई हैं। जब तक यह दुनिया रहेगी तब तक भारत के लोग मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्म दिवस इसी प्रकार मनाते रहेंगे। श्री राम को भारत की जनता कभी भुला नहीं सकेगी। श्रीराम का आदर्श, उनका चरित्र सबसे ऊंचा है। वह भारतीय संस्कृति के महान प्रतीक हैं। एक चमकते हुए सितारे हैं। मानवमात्र के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं।

श्री राम का जीवन मर्यादाओं और गुणों से भरपूर हैं। वह एक आदर्श पुरुष थे। एक आदर्श भाई थे। एक आदर्श मित्र थे, आदर्श पुत्र थे, आदर्श पति और आदर्श राजा थे।

माता-पिता के आज्ञाकारी पुत्र, सत्यवादी, प्रतिज्ञापालक, एक पत्नी व्रती, वर्ण व्यवस्था का पालन करने वाले, न्याय प्रिय, उदारता, त्याग, तपस्या, यथायोग्य व्यवहार करने वाले श्री राम का चरित्र सबसे ऊंचा है। उनके चरित्र में स्थान-स्थान पर भारतीय संस्कृति एवं उच्च गुणों का समावेश है। उनका सारा जीवन वेदानुकूल है।

इसलिए 19 अप्रैल को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जन्मदिन मनाते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का यत्न करें। हम संकल्प करें कि हम श्री राम के पदचिन्हों पर चलते हुए अपने कर्त्तव्य का उसी प्रकार पालन करेंगे जैसे श्री राम जी ने किया। अपने परिवार के प्रति, अपने देश के प्रति, अपने समाज के प्रति, अपने कर्त्तव्य का ठीक ढंग से पालन करेंगे तभी यह दिन मनाना हमारे लिए सार्थक होगा।

सामवेद भाष्यकार आचार्य रामनाथ वेदालंकार का महाप्रयाण

-प्रोफेसर (कर्नल) स्वतन्त्र कुमार, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

८ अप्रैल २०१३, दिन सोमवार को दोपहर १२.३५ पर आचार्य रामनाथ वेदालंकार के महाप्रयाण की सूचना जैसे ही गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में पहुंची, उससे समस्त गुरुकुल परिवार स्तब्ध रह गया। तत्काल एक विशाल शोकसभा की गयी और विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो० श्री ए०के० चोपड़ा जी तथा स्वयं मैंने उनके निवास स्थान वेदमन्दिर, ज्वालापुर हरिद्वार की कुटिया में जाकर उनके अन्तिम दर्शन किये एवं अन्त्येष्टि संस्कार की भावी योजना तैयार की। आश्रम के अध्यक्ष स्वामी यतीश्वरानन्द जी वहाँ उनकी सेवा में पूर्व से ही बड़ी तत्परता से लगे हुए थे और उन्होंने बहुत दिनों से दो ब्रह्मचारियों को रात-दिन उनकी देखभाल के लिये उनके पास नियुक्त कर रखा था।

९ अप्रैल को प्रातः ८ बजे से उनका भौतिक-शरीर वेदमन्दिर की यज्ञशाला के समीप जनता के दर्शनार्थ रखा गया तथा ठीक ९ बजे उनके शरीर को गुरुकुल कांगड़ी की ट्रैक्टर-ट्रॉली पर तख्त लगा कर फूलमालाओं और ओ३म् पताकाओं से सजाया गया। उनकी अन्तिमयात्रा का दृश्य वस्तुतः अत्यन्त दर्शनीय था। जहाँ ओ३म् और गुरुकुल कांगड़ी का ध्वज हाथ में लिये हुए दो ब्रह्मचारी आगे-आगे चल रहे थे, उनके पीछे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० श्री स्वतन्त्र कुमार जी, कुलसचिव श्री ए०के० चोपड़ा जी, पतञ्जलि योगपीठ के कुलपति श्री बालकृष्ण जी महाराज, गुरुकुल महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ० श्री हरिगोपाल शास्त्री जी, वर्तमान प्राचार्य श्री डॉ० केशवप्रसाद उपाध्याय जी, विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी, विधायक संजय गुप्ता जी, विधायक आदेश चौहान जी, डॉ० महावीर अग्रवाल, श्री वेदप्रकाश शास्त्री तथा शहर के गणमान्य लोग थे। इनके उपरान्त गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों की बैण्ड-बाजे की टीम थी, जो अन्तिम यात्रा की धुन बजा रही थी। तदुपरान्त विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० और एन०एस०एस० के सैंकड़ों छात्र अपनी निर्धारित वेशभूषा में विद्यमान थे, जो कदमताल मिलाते हुए चल रहे थे, ट्रैक्टर-ट्रॉली में आचार्य जी के पञ्चभौतिक शरीर को तख्तों के ऊपर इस प्रकार ऊंचा करके रखा गया था, जिससे नगरवासी उनके अन्तिम दर्शन दूर से भी कर सकें। सैंकड़ों फूलमालाओं, पुष्पों, नये वस्त्रों, चादरों, धूप-बत्तियों और ओ३म् पताकाओं से सुसज्जित गुरुकुल के प्राचीन स्नातक की इस यात्रा के पीछे वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में निवास करने वाले पीतवस्त्रधारी तपस्वी वानप्रस्थी तथा वृद्ध-माताएं पैदल चलते हुए शोक-संवेदना व्यक्त कर रहे थे। इनके बाद दो पंक्तियां बनाकर लालवस्त्रधारी हरिद्वार के साधु-संन्यासियों का समूह था, जिसका नेतृत्व ऊंची पगड़ी बांधे, छह फुट से भी ऊंचे, पैरों में खडाऊं पहने हुए स्वामी सम्पूर्णानन्द जी महाराज कर रहे थे। इस संन्यासी-वृन्द के पीछे एक जो विशाल जनसमूह चल रहा था, उसकी शोभा देखते ही बनती थी। गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय तथा विश्वविद्यालय, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर इन्टर कॉलेज, डॉ० हरिराम आर्य इन्टर कालेज, उतराञ्चल संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री भगवानदास केन्द्रीय संस्कृत महाविद्यालय तथा विभिन्न संस्कृत महाविद्यालयों के छात्र एवं प्राध्यापकगण, कन्या गुरुकुल परिसर हरिद्वार और कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या, छात्राएं तथा शिक्षिकाएं दो-दो पंक्तियों में वैदिकमन्त्रों का उच्चारण करते हुए चल रही थीं। आर्यसमाज ज्वालापुर, आर्यसमाज हरिद्वार, आर्यसमाज आर्यनगर, आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी, आर्यसमाज कटारपुर, आर्यसमाज फेरूपुर, आर्यसमाज लक्सर, आर्यसमाज सुल्तानपुर, आर्यसमाज रोहालकी, आर्यसमाज बी०एच०ई०एल, आर्यसमाज रुड़की, आर्यसमाज इकबालपुर, आर्यसमाज ऋषिकेश इत्यादि आर्यसमाजों से आये हुए सैंकड़ों नर-नारी तथा अधिकारीगण हाथ में ओ३म् का ध्वज लेकर स्वामी श्रद्धानन्द के शिष्य की जयकारों से दिशाओं को गुञ्जायमान कर रहे थे। इन सबके उपरान्त नगर के सैंकड़ों बुद्धिजीवी वर्ग, व्यापारी लोग, विभिन्न पार्टियों से नेताओं के समूह तथा चिकित्सकों का समाज चल रहा था। अशक्त वृद्धजनों को यात्रा में सम्मिलित करने के लिये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की बस सबसे अन्त में आ रही थी। इस यात्रा में बहुत से लोग अपनी मोटरसाईकिल, स्कूटर तथा कारों से भी सम्मिलित हो रहे थे। ट्राली पर लाऊड-स्पीकार लगा हुआ था, जिस पर कन्याओं के द्वारा मधुरकण्ठ से सामवेद के मन्त्रों का गान किया जा रहा था, बीच-बीच में 'आचार्य रामनाथ अमर रहें' 'जब तक सूरज-चांद रहेगा, पण्डित जी तेरा नाम रहेगा' ; 'वेदमाता यह सन्देश, याद रखेगा सारा देश' इत्यादि नारे लगाए जा रहे थे।

गुरुकुल के स्नातक आचार्य रामनाथ वेदालंकार की इस अन्तिम यात्रा के नेतृत्व की बागडोर कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी ने स्वयं संभाल रखी थी। वेदमन्दिर से विशाल जनसमूह में जैसे ही यह यात्रा निकलनी प्रारम्भ हुई, आचार्य जी के जयकारों और वेदमन्त्रों से समग्र हरिद्वार नगर गुंजायमान ध्वनि से गुञ्जित हो गया। आर्यनगर को पार कर वानप्रस्थाश्रम के अन्दर से होता हुआ, रामनगर से निकलकर जैसे ही यह विशाल जनसमूह सिंहद्वार पर स्थित चौराहे पर लगी हुई अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की आदमकद प्रतिमा के पास पहुंचा, तब सबकी आंखें नम थी, ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो जैसे प्राचीन गुरुकुल कांगड़ी का यह रामनाथ ब्रह्मचारी अपने कुलपिता आचार्य मुंशीराम से आज अन्तिम विदाई चाह रहा है और कह रहा है कि "आचार्य जी ! आपके द्वारा दी गयी व्रत-दीक्षा को मैंने आजीवन निभाया है, मैंने वेदभाष्य करके वेद की सेवा की है, स्वाध्याय करके अपने जीवन को पवित्र बनाया है, वेद पर लेख लिखकर सर्वसमाज को उठाने का पूरा प्रयास किया है। हे गुरुवर ! अब यह मेरा जीर्ण शरीर थक चुका है, अतः अब मैं आपके ही चरणों में पुनः आ रहा हूँ।"

यह यात्रा जैसे ही अमन चौक पर पहुंची वहां आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं मन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री ओम प्रकाश मान जी एवं मन्त्री जी, हरियाणा आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य यशपाल जी तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान और मन्त्री जी की तरफ से तथा गुरुकुल परिवार की तरफ से विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी ने शाल एवं फूलमालाएं चढ़ाकर आचार्य जी का सम्मान किया। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तराञ्चल के छायाप्रधान श्री देवराज आर्य जी एवं वानप्रस्थाश्रम के प्रधान एवं मन्त्री की तरफ से भी शाल तथा फूलमालाएं अर्पित की गयीं।

कुलसचिव प्रो० ए० के० चोपड़ा जी, वित्ताधिकारी श्री राजेन्द्र मिश्र जी, सम्पदाधिकारी डॉ० श्री करतारसिंह जी, प्रभारी-लेखा श्री शशिकान्त शर्मा जी, विधि अधिकारी श्री नलनीश विग जी, जनसम्पर्क अधिकारी डॉ० प्रदीप जोशी जी, प्राच्यविद्या संकायाध्यक्ष प्रो० विजयपाल शास्त्री जी, विज्ञान महाविद्यालय के संकायाध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र कुमार अग्रवाल जी, प्रबन्धन संकायाध्यक्ष प्रो० वी०के० सिंह जी, कम्प्यूटर विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो० वी०के० शर्मा जी, प्रौद्योगिकी संकायाध्यक्ष प्रो० आर० डी० कौशिक जी, शिक्षक संघ के अध्यक्ष प्रो० अम्बुज शर्मा एवं सचिव प्रो० पी०सी०जोशी, शिक्षकेतर कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष बलजीत सिंह बिड़ला तथा सचिव श्री रमेश शर्मा जी, छात्रसंघ अध्यक्ष श्री सिमर जीत सिंह, पूर्व कुलसचिव एवं दर्शनविभागाध्यक्ष प्रो० जयदेव विद्यालंकार जी, गुरुकुल के आचार्य यशपाल आर्य तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जयप्रकाश जी, प्रो० प्रभात कुमार विद्यालंकार जी, डॉ० भारतभूषण विद्यालंकार जी, प्रो० ज्ञानप्रकाश शास्त्री जी, प्रो० श्री एम०आर० वर्मा जी, गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय के मुख्याध्यापक डॉ० विजेन्द्र शास्त्री, डॉ० योगेशशास्त्री, कन्या गुरुकुल परिसर हरिद्वार की कॉर्डीनेटर डॉ० संगीता विद्यालंकार जी, कन्या गुरुकुल परिसर देहरादून की कॉर्डीनेटर इत्यादि ने फूलमालाएं चढ़ाकर तथा शाल ओढ़ाकर कुलमाता के इस प्रचीन स्नातकपुत्र को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय.....

19 अप्रैल जन्मदिन पर विशेष-

सर्वस्व त्यागी महात्मा हंसराज

भारतभूमि विशेषकर पंजाब प्रदेश महापुरुषों की जन्म भूमि के साथ-साथ कर्मस्थली भी रही है। इस पावन धरा पर अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया। ऐसे महापुरुषों की श्रृंखला में एक नाम है महात्मा हंसराज जैसा नाम वैसा काम।

महर्षि दयानन्द के सन् 1883 में बलिदान के बाद लाहौर आर्य समाज में जो श्रद्धांजलि सभा हुई। उस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारियों ने महर्षि दयानन्द की स्मृति में दयानन्द ऐंग्लो विद्यालय लाहौर में खोलने का निश्चय किया। उस समय आर्य समाज के पास जन शक्ति तो आ गई थी क्योंकि आर्य समाज का प्रचार व प्रसार तेज़ी से बढ़ रहा था। धन की कमी थी परन्तु धीरे-धीरे करके वह भी दूर हो रही थी क्योंकि कई धनी मानी लोग भी आर्य समाज के साथ जुड़ते जा रहे थे। लाहौर में कॉलेज से पहले स्कूल खोलना आवश्यक था क्योंकि स्कूल के विद्यार्थी ही कॉलेज में जाते हैं यदि स्कूल में बच्चों का अच्छी प्रकार निर्माण किया जाए तो कॉलेज में विद्यार्थियों पर कम मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए पहले स्कूल के लिए धन संग्रह होने लग गया, परन्तु धन के साथ-साथ एक सुयोग्य प्रिंसीपल की तलाश की जाने लगी। ऐसी अवस्था में एक सुयोग्य नौजवान हंसराज ने अपने बड़े भाई मुल्खराज जी से बात की कि यदि वह अपने वेतन में से चालीस रुपए उनके परिवार के लिए प्रतिमास दे दिया करेंगे तो वह अपना सारा जीवन आर्य समाज को अर्पण कर देंगे। बड़े भाई ने स्वीकार कर लिया। इस पर उस युवक ने दयानन्द ऐंग्लो स्कूल के लिए अपना जीवन दान देने की घोषणा कर दी। यहां दोनों भाईयों का आर्य समाज के लिए एक अनोखा दान था व अनोखा त्याग था जिसे उन्होंने जीवन भर निभाया।

जिस नौजवान ने गरीबी में अपनी पढ़ाई पूरी की और बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की। ऐसी अवस्था में युवक हंसराज ने इस स्कूल के लिए अपनी नि:शुल्क सेवाएं दे दी। यह उनका बहुत बड़ा महान त्याग था।

सन् 1886 में लाहौर में पहला दयानन्द ऐंग्लो स्कूल खोला गया और नवयुवक हंसराज इसके पहले प्रिंसीपल बने। यह स्कूल इतना सर्वप्रिय हुआ कि इसमें विद्यार्थियों की संख्या निरन्तर बढ़ती चली गई और स्कूल की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई और लाहौर का यह प्रथम श्रेणी का स्कूल बन गया। इसका परिणाम यह हुआ कि 1889 में इस स्कूल को कॉलेज का रूप देना पड़ा और महात्मा हंसराज जी इस कॉलेज के प्रिंसीपल बना दिए गए। उन्होंने कॉलेज को इतनी योग्यता से चलाया कि सारे देश में इस कॉलेज की ख्याति फैल गई। कुछ ही समय में नवयुवक हंसराज, महात्मा हंसराज के नाम से सारे देश में प्रसिद्ध हो गए। महात्मा जी की सादगी और त्याग का प्रभाव था कि 1890 में उन्हें आर्य समाज तथा 1891 में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान बना दिया गया।

महात्मा हंसराज जी जालन्धर के समीप ही होशियारपुर ज़िले के बजवाड़ा गांव में 19 अप्रैल 1864 को लाला चुन्नी लाल जी के यहां पैदा हुए। इनकी माता का नाम हरदेवी था। दोनों ही बहुत परिश्रमी थे। बारह वर्ष की अवस्था में पिता का देहावसान हो गया परन्तु माता हरदेवी ने अपनी हिम्मत नहीं हारी। वह अपने बच्चों के प्रति अपने कर्त्तव्य को भली-भांति निभाती रही। बालक हंसराज भी सर्दी-गर्मी की चिन्ता न करते हुए अपनी पढ़ाई करते रहे। नंगे पांव जाते समय गर्मी में पैर तपते थे और सर्दी में ठिठुर जाते थे परन्तु यह बालक तो प्रारम्भ से तपस्वी था। सब कष्ट प्रसन्नता से झेलता रहा। कोई नहीं जानता था कि यह एक साधारण सा बालक एक दिन इतना बड़ा महान् व्यक्ति बन जाएगा कि जिसे सारा संसार याद करेगा। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के पश्चात् बालक हंसराज उच्च शिक्षा के लिए लाहौर चले गए क्योंकि उस समय लाहौर शिक्षा का गढ़ माना जाता था। लाहौर में गवर्नमैंट कॉलेज में अच्छे अंकों के साथ बी० ए० की परीक्षा पास की। इन्हीं दिनों में सन् 1877 में महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी भी वेद प्रचारार्थ लाहौर पहुंचे थे और मेधावी हंसराज ने उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त किया था। महर्षि के सम्पर्क में आते ही हंसराज की जीवन धारा में नया मोड़ ले लिया और यह महर्षि के दीवाने हो गए।

महात्मा हंसराज एक सद् गृहस्थी थे। उन्होंने गृहस्थ धर्म का भी अच्छी प्रकार से पालन किया। अपने बड़े भाई से प्राप्त चालीस रुपए में ही अपना गुज़ारा किया। कॉलेज चल पड़ा आमदनी बढ़ गई, आमदनी बढ़ने के कारण महात्मा जी की आर्थिक सहायता करनी चाही परन्तु महात्मा जी ने ठुकरा दिया। बहुत सादगी से अपना तथा अपने परिवार का जीवन यापन किया। कई कष्टों का सामना किया परन्तु फिर भी अपने पथ से विचलित नहीं हुए। भर्तृहरि जी का यह श्लोक उनके ऊपर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होता है कि-

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्,
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्यपथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:

वस्तुत: महात्मा हंसराज जी श्वेत वस्त्रों में एक सन्यासी थे। महान त्यागी थे, तपस्वी थे। स्वामी सर्वदानन्द जी से जब कुछ अनुयायियों ने निवेदन किया कि वह महात्मा हंसराज को सन्यास की दीक्षा दे दें तो उन्होंने स्पष्ट कहा था महात्मा जी सभी प्रकार की ऐषणाओं से मुक्त हैं। महात्मा जी का त्याग किसी सन्यासी से कम नहीं हैं और मात्र वस्त्र पहन कर सन्यास का बाना पहनने की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं है।

महात्मा हंसराज जी मात्र 74 वर्ष की आयु में 15 नवम्बर 1938 को इस संसार को छोड़कर चले गए। उन्होंने समाज सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य किया। शिक्षा के साथ-साथ समाज सेवा का कार्य वह जीवन भर करते रहे। हम उस महान् त्यागी, तपस्वी को उनके जन्मदिवस पर श्रद्धासुमन भेंट करते हैं। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु आज के युग में भी आर्य समाज के लिए, देश व राष्ट्र के लिए, मानव मात्र का कल्याण करने के लिए महात्मा हंसराज जैसे व्यक्ति पैदा कर दे। आर्य समाज को तथा इस देश को आज फिर महात्मा हंसराज जैसे-त्यागी, तपस्वी तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। हम 19 अप्रैल को उनके जन्म दिवस पर उन्हें शत्-शत् प्रणाम करते हैं।

-प्रेम कुमार भारद्वाज सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

ज़िला समस्तीपुर में वेद प्रचार

बिहार के ज़िला समस्तीपुर में बैकण्ठपुर ब्रह्मण्डा चौक में 26 से 28 फरवरी तक सफलतापूर्वक स्थानीय आर्य समाज की ओर से वेद प्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में दिल्ली से पधारे स्वामी शिवानंद सरस्वती व हरियाणा से आए पंडित इन्द्रजित देव के राष्ट्रीय व वैदिक विषयों पर प्रभावशाली प्रवचनों से श्रोताओं ने लाभ प्राप्त किया। मथुरा के पंडित उदयवीर शास्त्री व बिहार के पंडित दयानन्द सत्यार्थी व श्रीमती अंजु सुमन ने अपने भजनों व गीतों से श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। कार्यक्रम की उल्लेखनीय बात यह रही कि प्रात: सात बजे से रात्रि दस बजे तक, केवल सायं 5 बजे से आठ बजे तक का समय छोड़कर, निरन्तर चलता रहा। प्रात: श्री शंकर पोछार द्वारा दो घंटों तक शरीरोपयोगी प्राणायाम व व्यायाम भी सिखाए जाते रहे। बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य मंत्री श्री रमेन्द्र गुप्त जी ने कार्यक्रम में पधारकर शोभा बढ़ाई व पंडित राम शंकर शास्त्री ने उत्सव की अध्यक्षता की जबकि डा० राजकुमार शास्त्री ने कुशल संचालन किया। प्रात: प्रतिदिन 3 घंटों तक वैदिक गायत्री यज्ञ की भी व्यवस्था रहती थी। तीनों दिन ऋषि लंगर अनवरत चलाया गया।

इसी प्रकार का कार्यक्रम 1 मार्च से 3 मार्च तक गांव जनकपुर ज़िला समस्तीपुर में भी चला जिसमें ज़िला भर के सैंकड़ों आर्यजन सम्मिलित हुए व इन्हीं विद्वानों के सफल व प्रभावशाली उपदेश व भजन, गीत चलते रहे। **-डॉ० राजकुमार शास्त्री, संयोजक**

महान् शिक्षाशास्त्री महात्मा हंसराज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

-ले० कर्नल प्रो० स्वतन्त्र कुमार कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रसिद्ध गायक 'बाजू बावरा' के गांव में लाला सलामत राय के पुत्र लाला चुन्नीलाल के घर में १९ अप्रैल १८६४ ई को, जिस बच्चे का जन्म हुआ उसका नाम हंसराज रखा गया। जिस गांव में इस बच्चे ने जन्म लिया, बाजू बावरा की स्मृति में उस गांव का नाम बजवाड़ा रखा गया था, जो होशियारपुर जिले के अन्तर्गत आता है। बालक की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में पूर्ण होने के उपरान्त उसे आगे की शिक्षा के लिये होशियारपुर में भेजा गया, जो उस समय बजवाड़ा से २-३ मील की दूरी पर था। गाँव और जिले के मध्य में एक बरसाती नाला पड़ता था, जिसे वर्षा के दिनों में पार करके जाने में बड़ी परेशानी आती थी। किन्तु बालक ने कभी धैर्य नहीं छोड़ा और घनघोर वर्षा होने के उपरान्त भी पानी से उफनते हुए उस नाले को पार करने में उसने कभी संकोच नहीं किया। महात्मा आनन्दस्वामी ने 'महात्मा हंसराज' नामक अपने लेखन में बालक हंसराज के अध्ययन की एक अन्य घटना को कुछ इस प्रकार से भी चित्रित किया है-"**भरी दोपहरी को जलती धूप में तपती रेत, नन्हें बालक के कोमल पांव जला-जला डालती। तब हंसराज लकड़ी की तकती पांव तले रख कर खड़ा हो जाता। इससे जलन कुछ कम होती और वह फिर आगे बढ़ने लगता। इस तरह जब-जब सेक असहय हो उठता, वह यों ही सुस्ता लेता।**" वस्तुत: जो लोग उन्नति के मार्ग में विपरीत परिस्थितियों के होने पर भी धैर्य को नहीं छोड़ते, वे एक न एक दिन अवश्य ही महान् बन जाते हैं। संसार उनके कार्य और वचनों को अपनाकर आगे आने वाले समाज को शिक्षित करता है। जो लोग धुन के धनी होते हैं, और अपने उद्देश्य के प्रति सचेत तथा प्रयासरत रहते हैं, वे ही जीवन में सफलतम व्यक्ति कहलाते हैं। महात्मा हंसराज अध्ययन काल से ही अपने उद्देश्यों के प्रति जागरूक रहे। "मैं कैसे आर्यसमाजी बना ?" विषयक लेख जो उन्होंने "आर्य गजट" नामक पत्रिका के लिये लिखा था-उसमें बताया है कि वे किस प्रकार धुन के धनी थे। वे सच्चाई के लिये बचपन से ही अडिग, दृढ़-निश्चयी और सत्यवक्ता थे। उन्होंने एक घटना की चर्चा करते हुए लिखा है-"एक दिन हमारी दसवीं कक्षा के मुख्याध्यापक महोदय के पास अंग्रेजी की पुस्तक, जिसका नाम सीनियर रीडर था, पढ़ा रहे थे। मुख्याध्यापक जानते थे, कि मैंने अपने पाठयक्रम की पुस्तक ईसा मसीह का जीवन-चरित्र भली प्रकार से पढ़ा हुआ है। अत: इस पुस्तक-विषयक अनेक प्रश्न मुझसे किया करते थे। मैं उनका सन्तोषजनक उत्तर दिया करता था। वह मुझसे प्रसन्न थे। सीनियर रीडर में प्रथम पाठ यही था कि सृष्टि को बने हुए छह सहस्त्र वर्ष हुए हैं। जो लोग आदिकाल में हुए, उनका अनुभव आधुनिक युग के लोगों की अपेक्षा बहुत न्यून था और इसलिये उनकी योग्यता एवं उनका ज्ञान आधुनिक युग की अपेक्षा बहुत घटिया स्तर का था।"

हैडमास्टर साहिब ने मुझसे पूछा कि हंसराज ! क्या यह सत्य है ? मैंने बाल्यकाल की चपलता से मुख्याध्यापक महोदय पर एक अभद्र प्रश्न कर दिया, मैंने पूछा, "क्या पिता का अनुभव अधिक होता है अथवा पुत्र का ?" इसका उत्तर मुख्याध्यापक क्या दे सकते थे ? यह तो कह नहीं सकते थे कि पिता का अनुभव कम होता है। वह कुछ खीज-से गये। उन्होंने कहा कि प्राचीन हिन्दुओं को ईश्वर का ज्ञान नहीं था। वे आग, पानी, वायु, सूर्य आदि की पूजा किया करते थे। मैंने कहा "श्रीमान् जी, यह ठीक नहीं।" "कसीसे-हिन्द" में मैंने पढ़ा हुआ था कि हिन्दू लोगों को परमेश्वर का ज्ञान था। वे उस परमेश्वर के बारे में मानते थे कि उसके पांव नहीं, परन्तु सर्वत्र पहुंचता है, उसके हाथ नहीं, परन्तु वह सब कुछ ग्रहण करता है, आदि-आदि। मैंने सब कुछ सुना दिया। इसका उत्तर क्या बन सकता था ! परन्तु मुझे यह ज्ञान नहीं था कि अग्नि, वायु के विषय में यथार्थ विचार क्या है। मैंने वैसे ही यह पौराणिक उत्तर दे दिया कि प्राचीन आर्य इन भूतों के द्वारा परमेश्वर की पूजा किया करते थे, न कि भूतों की।"

मुख्याध्यापक भी संस्कृति से अनभिज्ञ थे। वह क्या कह सकते थे ? अन्त में उन्होंने कहा कि देखो! इस रीडर में यह लिखा है और इसलिए यह सत्य है। उनकी यह युक्ति ठीक नहीं थी। मैंने झट से कह दिया कि रीडर बनाने वाले की मूर्खता है कि जो उसने ऐसा लिख दिया। इस पर उन्होंने मुझे तीन-चार बेंत लगाये तथा कक्षा से निकाल दिया। मैं बाहर निकल आया और अगले दिन सैकण्ड मास्टर साहिब के पास गया और कहा कि मुख्याध्यापक साहिब के पास सिफारिश करके मुझे कक्षा में सम्मिलित होने की अनुमति लें दें। वह बंगाली तो थे ही, उर्दू अच्छी प्रकार नहीं बोल सकते थे। उन्होंने कहा, "हंसराज ! मैं तो पहले ही समझता था कि तुम चपल हो। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था। मैं यत्न करूंगा।" तीन दिन के उपरान्त मुझे कक्षा में [illegible] की आज्ञा मिल गयी तथा मैंने अपने मन में यह ठान लिया कि मैं कक्षा में ईसाई मत के विरुद्ध कुछ न कहूंगा।

वास्तविकता यह थी कि मैं अपनी कक्षा में एक सुयोग्य छात्र था और मुख्याध्यापक महोदय भी मुझसे प्रेम करते थे। यदि मैं भूल नहीं करता तो उस वर्ष मिशन स्कूल में १७ विद्यार्थियों में से केवल मात्र मैं ही दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण हुआ।"

इस घटना से यह ज्ञात होता है कि बालक हंसराज सच्चाई को कहने में बचपन से ही निर्भीक थे। घटना तो घट गयी, बात भी आई-गई हो गयी, किन्तु हंसराज के मन में यह जानने की तीव्र इच्छा जागृत हो गयी कि क्या हमारे पूर्वज प्रकृति के तत्त्वों की ही पूजा किया करते थे ? किसी से उन्हें ज्ञात हुआ कि इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर आर्यसमाज के सत्संग में आने-जाने से मिल सकता है। इसके लिये उन्होंने उक्त लेख में लिखा, "मैंने इधर-उधर से पूछताछ करके आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाना प्रारम्भ कर दिया। मैं समाज के उपदेशों को सुनता और पत्रिकाओं को पढ़ता। लाहौर समाज के पूज्य प्रधान दिवंगत लाला साईंदास जी की दृष्टि समाज में आने वाले नये व्यक्तियों पर अतिशीघ्र पड़ती थी। उन्होंने मुझे बुलाया और प्रेरणा दी कि मैं सन्ध्या कण्ठस्थ कर लूं। उन्होंने विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने के लिये यह सूचना भी निकाली कि जो विद्यार्थी उनको सन्ध्या कण्ठस्थ करके सुनावेगा, उसको वह पुरस्कार देंगे। इस प्रकार मैंने उनको सन्ध्या सुना दी और उनसे दो रुपये पुरस्कार स्वरूप प्राप्त किये। मैं समाज के साप्ताहिक सत्संगों से कभी अनुपस्थित नहीं होता था...। मुझे साप्ताहिक अधिवेशन में सम्मिलित होने की इतनी धुन थी कि मैं समाज के साप्ताहिक अधिवेशनों से अपनी एन्ट्रेन्स की परीक्षा के दिनों में भी अनुपस्थित नहीं रहा।"

बालक हंसराज ने आर्यसमाज लाहौर में निरन्तर जाना-आना प्रारम्भ कर दिया, जिस कारण उसे प्राचीन भारतीय साहित्य से रू-ब-रू होने का अच्छा अवसर मिला और वे समाज के प्रति पूर्ण निष्ठा से समर्पित हो गये। किन्तु इसी बीच ३० अक्टूबर १८८३ ई० को आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का असहय वेदनाओं को झेलने के उपरान्त निधन हो गया। उनके जीवन की अन्तिम लीला को पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला जीवनदास को बहुत निकटता से देखने का सौभाग्य मिला था। ये दोनों आर्यसमाज लाहौर के सक्रिय सदस्य थे। अजमेर से लौटकर इन्होंने जब लाहौर में सार्वजनिक सभा के अन्तर्गत ऋषि के जीवन की अन्तिम यात्रा का वर्णन सुनाया, तब इस सभा के कुछ दिवसोपरान्त पुन: एक विशाल सभा हुई और उसमें निश्चय किया गया कि महर्षि के इस संसार से जाने के पश्चात् भी विद्या का ज्ञानदीप निरन्तर प्रज्वलित रहना चाहिये-ऐसा कुछ कार्य किया जाये। इसके लिये पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी और उनके कुछ साथियों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की याद में एक दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज खोलने का विचार बनाया। प्रथम तो सभा में भजनोपदेशकों के आर्यसमाज विषयक भजन हुए, तदुपरान्त माई भगवती का स्त्रियों की दुर्दशा और उनमें शिक्षा की कमी को लेकर, ओज तथा भाव से भरपूर हृदय को स्पर्श करने वाला मर्मस्पर्शी व्याख्यान हुआ। जिसमें उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि, "हिन्दुओ ! लज्जा की बात है कि तुम आर्यवर्त में लगभग २० करोड़ के हो और एक कॉलेज भी स्थापित नहीं कर सकते और तुम्हारे दूसरे भाई जो केवल चार-पाँच करोड़ हैं, उन्होंने दो कॉलेज स्थापित कर लिये।" इनके उपरान्त लाला लाजपतराय का ओजस्वी व्याख्यान हुआ, जिसमें तत्कालीन विदेशी शिक्षापद्धति के दोषों को दिखाकर प्राचीन शिक्षा-पद्धति और आधुनिकता के सम्मिश्रण से युक्त एक राष्ट्रिय कॉलेज खोलने की उन्होंने चर्चा की।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

राम नवमी पर विशेष-

आर्य संस्कृति के प्रतीक श्रीराम

-ले० स्व० अशोक कौशिक

आर्य संस्कृति के प्रतीक के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से बढ़कर अन्य कोई प्रतीक दृष्टि-गोचर के प्रतिनिधि के रूप में प्रेरणा के अजस्र स्रोत रहे हैं। मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं के जो आदर्श हो सकते हैं, वे सब सर्वोत्तम रूप से श्रीराम में ही घटित होते हैं। राम आदर्श राजा हैं, आदर्श पुत्र हैं, आदर्श पति हैं, आदर्श भाई हैं और आदर्श स्वामी हैं। ऋषियों द्वारा निर्धारित मर्यादाओं का जितनी सुन्दर रीति से राम का पालन किया है, वह उतनी सुन्दर रीति से राम से किसी अन्य ने कदाचित ही किया हो। इसलिए राम को 'रामो विग्रहवान् धर्मः' अर्थात् राम धर्म की साक्षात् प्रतिमा हैं, कहा गया है।

वेद कहता है-अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु सम्मना। पुत्र पिता के व्रत का पालन करने वाला हो और माता के मन की इच्छाएं पूर्ण करने वाला हो। अथवा मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत-स्वसा। भाई, भाई से द्वेष न करे और बहिन, बहिन से द्वेष न करे। इस प्रकार परिवार में सुख और शान्ति के लिए नैतिक आदर्शों की स्थापना करने वाले जितने भी आदेश वेद में हैं, उन सबका भली प्रकार पालन करने वाले महापुरुष यदि कोई हैं तो वे श्रीराम ही हैं।

इसलिए तो उत्तर में हिमालय की कन्दराओं से लेकर विन्ध्य और सह्याद्र की अधित्यकाओं तक और भागीरथी गंगा से लेकर दक्षिण के रामेश्वरम् समुद्र तट तक सर्वत्र राम नाम की गूंज है। अविभाजित भारत का वह कौन-सा भाग है जहां राम की स्मृति बिखरी न पड़ी हो। भले ही तक्षशिला, लवपुर (लाहौर), कुशपुर (कसूर) आज पाकिस्तान के अंग हैं, किन्तु वे स्मारक तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम और उनके वंशजों के ही हैं। कवियों तथा सन्तों ने राम की कथा को सम्प्रदायातीत बना दिया है। बौद्ध और जैन कथाओं में रामकथा का समावेश है। गौंड़-भील आदि शिक्षित-अशिक्षित सभी वर्गों में रामकधा की धूम है।

स्याम, अनाम, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया, मलेशिया आदि देशों और द्वीपों में रामकथा का विस्तार है। मैक्सिको में राम-सीता के नाम से उत्सव मनाया जाता है और राम के ही नाम से मिस्र के राजाओं के नाम रखे जाते हैं। बैंकाक में रामायण सम्मेलन होता है और मारीशस में रामचरित मानस का गुटका लाखों की संख्या में भारत से मंगाकर घर-घर पहुंचाया जाता है। इस प्रकार सारे संसार के इतिहास में अन्य शायद ही कोई ऐसा महापुरुष हो जो इतने व्यापक रूप से चर्चित हो।

श्रीराम केवल हिन्दुओं के ही आराध्य नहीं रहे। ईसाई और मुसलमानों ने भी उनका पर्याप्त गुणगान किया है। सर्वात्मना स्वयं को कट्टर कैथोलिक कहलाने वाले फादर कामिल बुल्के की तो अभी कल की बात है, किन्तु उनसे पूर्व भी अनेक ईसाई मतावलम्बियों ने राम का गुणगान किया है तथा रामचरित मानस का अपनी-अपनी भाषाओं में अनुवाद भी किया है। यूरोप की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है और ये अनुवादक सभी ईसाई ही थे। यही स्थिति इस्लाम के अनुयायियों की भी है। उसमें तो राम के गुणात्मक अगणित हैं। यहां कुछ नाम दे देना समीचीन होगा। यथा-अब्दुल रहमान खानखाना, रसखान, मलिक मोहम्मद जायसी, अमीर खुसरो, ज़फर रजा जैदी, जहीर नियाजी, मोहम्मद हयात, मिर्जा हसन नासिर, जरीना रहमत, नूरजहां बेगम, आयशा खातून, रजिया बेगम, ताज़ बीबी, दीन मोहम्मद दीन, इकबाल बिस्वानी, अब्दल रशीद खां रशीद, मोहम्मद फैयाजुद्दीन, सैयद महफूज रिजवी, फिदा वादवी, नैाजिश प्रतापगढ़ी, तकी रामपुरी, इकबाल कादरी के अतिरिक्त पाकिस्तान के प्रवर्तक सर अल्लामा इकबाल जिन्होंने कभी लिखा था-

है राम के बजूद पर हिन्दोस्तां को नाज,
अहले नजर समझते हैं उसको इमामे हिन्द।
ऐजाज इस चिरागे हिमायत से है यही,
रोशनतर अजू सहर है जमाने में शमे हिन्द।
तलवार का धनी और शुजाआत में फर्द था,
पाकीजगी में, जोशे मोहब्बत में मर्द था।

स्वयं पाकिस्तानी शायर जफर अली खां ने लिखा है-

नक्शे तहजीबे हनूद अपनी नुमाया है अगर,
तो वो सीता से है, लक्ष्मण से है, राम से है।
मैं तेरे साजये तसलीम पै सर धुनता हूं,
कि यह इक दूर की निस्वत तुझे इस्लाम से है।

इसी प्रकार पाकिस्तान के एक अन्य शायर ने कभी लिखा था-

हिन्दियों के दिल में बाकी है मोहब्बत राम की,
मिट नहीं सकती कयामत तक हुकूमत राम की।

मुस्लिम कवियों में ही बंगला कवि काजी नजरुल इस्लाम ने तो राम, कृष्ण, काली, दुर्गा, चण्डी आदि के गुणगान में ही अपनी कविता को धन्य माना था। आधुनिक रसखान कहे जाने वाले अब्दुल रशीद ने भी श्रीराम पर बहुत लिखा है। इसी प्रकार अमीर खुसरो की एक उलट बांसी है-

तन-मन-धन का है वो मालिक,
वा ने दिया मेरे गोद में बालक।
वा से निकला जी को काम,
ऐ सखि साजन ? ना सखि राम॥
बखत बेवखत मोया वा की आस,
रात-दिना वह रहवत पास।
मेरे मन को सब करत है काम,
ऐ सखि साजन ? ना सखि राम॥

ऐसे एक नहीं कितनी ही उदाहरण गद्य और पद्य के संसार में बिखरे पड़े हैं।

श्रीराम के जीवन में उस क्षण की कल्पना कीजिए जब राजप्रसाद में राम के राज्याभिषेक की तैयारियां चल रही हों, राज्याभिषेक का मुहूर्त तक निश्चय कर दिया गया हो और तब अकस्मात् राज्याभिषेक की अपेक्षा वनवास की आज्ञा हो जाए तो साधारण मनुष्य पर क्या बीत सकती है, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। किन्तु राम तो साधारण मनुष्य नहीं थे। आदि कवि वाल्मीकि ने उस अवस्था का वर्णन करते हुए लिखा-''राज्याभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर विशेष प्रसन्नता के चिन्ह दिखाई दिए और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के लक्षण दिखाई दिए।''

एक अन्य अवसर था, रावण के मारे जाने का। उस अवसर पर विभीषण ने अपनी प्रसन्नता का अतिरेक व्यक्त किया। यहां तक कि वह रावण का भाई होने के नाते उसकी अन्त्येष्टि तक करने के लिए उद्यत नहीं हो रहा था। उस समय राम ने जिस प्रकार विभीषण को समझाया वह कोई राम सदृश धीर-वीर-गम्भीर और विवेकी ही कर सकता था। राम ने विभीषण से कहा, ''मरण के उपरान्त सारा वैर-विरोध समाप्त हो जाता है। हमारा प्रयोजन भी पूर्ण हो गया है। अब तुम इसका संस्कार करो। यही हम दोनों का कर्त्तव्य है।''

राम को गुणों की परख और गुणी के लिए उनके मन में प्रतिष्ठा थी। राम चाहते थे मानवता की भलाई के लिए उस विद्या का संचय किया जाए जो रावण के पास थी। अतः जब रावण युद्ध में धराशायी हो गया तो उस समय राम ने रावण के पास उस विद्या को सीखने के लिए लक्ष्मण को भेजा था। उस समय उन्होंने कहा कि-''जिससे शिक्षा की याचना करनी हो ऐसे गुरु के चरणतल के समीप बैठकर याचना करनी होती है।'' लक्ष्मण के विनय से प्रभावित हो रावण ने लक्ष्मण को युद्ध विद्या और राजनीति की शिक्षा प्रदान की।

राम सभी प्रकार से आर्य संस्कृति के प्रतीक हैं। आदर्श पुत्र के रूप में वे कौशल्या के आनन्दवर्द्धक और दशरथ के आज्ञाकारी हैं। अनुजों, सखाओं और पुरवासियों के परम प्रिय हैं। मुनि यज्ञ में बाधक राक्षसों के संहारक एवं अहिल्या के उद्धारक हैं। अपने स्वभावशील से वे मनुष्यों को ही नहीं अपितु पशु, पक्षियों को भी सुख देने वाले हैं। निम्न जाति के कहे जाने वाले निषादराज को अपना मित्र मानते हैं। शबरी के जूठे बेरों की प्रशंसा करते हैं। वनवासियों की सहायता से रावण का विनाश कर लंका में सुशासन स्थापित करते हैं। जननी और जन्मभूमि के प्रति समर्पित हैं। वे लोकसत्ता और लोकमत में गहन आस्थावान हैं। सन्त तुलसी के शब्दों में-''समुद्र का पार पाना सम्भव है, किन्तु राम के गुणों का पार किसी ने नहीं पाया।''

पृष्ठ 4 का शेष- महान शिक्षाशास्त्री.....

उस सभा में लाहौर से प्रकाशित दैनिक ट्रिब्यून के सम्पादक बाबू जादूनाथ का व्याख्यान भी कराया गया, जिसकी चर्चा करते हुए पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपने भाषण में कहा था कि ''आध्यात्मिक, भौतिक शिक्षा के अतिरिक्त यदि आपको जातीयता का कुछ भी विचार है तो दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज में सहायता अवश्य करो।''

विद्यार्थी जी के भाषण का जनता पर गहरा असर पड़ा। इनके भाषण को सुनने के उपरान्त लाला हंसराज बी०ए० कुछ बोलने के लिये खड़े हुए, जिस वक्तव्य में उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा जाति एवं देश के लिये कष्टों को झेलते हुए किये गये अथक प्रयासों का वर्णन किया और उनकी स्मृति में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज खोलने का प्रस्ताव प्रवाहपूर्ण शब्दों में रखा, इस भाषण में उन्होंने स्कूल के लिये अपना जीवनदान देने की भी घोषणा कर दी। इस भाषण को सुनकर लोगों ने सहस्त्रों रुपया उसी समय दान कर दिया। उस वक्तव्य का वर्णन तत्कालीन उर्दू के मासिक पत्र 'आर्यसमाज' में चैत्र मास संवत् १८४२ विक्रमी को निम्नवत् प्रकाशित हुआ था-''इसके पश्चात् उन्होंने घोषणा की कि मैं श्रोताओं के सम्मुख अपना सारा जीवन दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज के नाम बिना किसी वेतन के अर्पण करता हूँ और इसमें मुख्याध्यापक के रूप में कार्य करूंगा।''

लाला हंसराज की इस वीरता, उत्साह, जीवनभेंट, जातीय सहानुभूति ने लोगों के हृदयों में ऐसा जोश भर दिया कि जिसका वर्णन करने में लेखनी अक्षम है। लोगों ने फूलों की वर्षा लालाजी पर की। हम प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा सर्वान्तर्यामी आपके शिवसंकल्प और हार्दिक उत्साह में प्रत्येक अवस्था में सहायक हों।

इसके पश्चात् मियानी शाहपुर मुलतान के ज्वालासहाय ने उठकर आठ सहस्त्र रुपया रोकड़ आठ थैलियों में वहीं इस पवित्र कार्य के लिये दान दिया। इसके पश्चात् लाला शामदास पैंशनर ने अपनी सेवाएं कॉलेज को भेंट की। आर्यसमाज मुलतान ने दो सहस्त्र छह सौ रुपया वहीं भेंट किया। और भी लोगों ने दान दिया व लिखवाया। एक सौ पच्चीस का मासिक दान कुछ सज्जनों ने लिखवाया। बहुत सी देवियों ने वहीं स्वर्णाभूषण उतार कर दिये। कई पुरुषों ने अपनी भुजाओं से अनन्त उतारकर दान कर दिये।

दयानन्द एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना का आर्य युवकों के हृदय में जहाँ प्रथम उद्देश्य महर्षि दयानन्द का स्मारक बनाना था, वहीं इसका एक अन्य कारण भी था, जो केवल आर्यजनों को ही नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के हृदय को बार-बार कचोटता था और वह यह था कि पराधीन भारतमाता के मूल-निवासियों को इस प्रकार की शिक्षा और दीक्षा से ईसाई मिशनरी उन्हें हिन्दुत्व से छुड़ाकर ईसाई बनाने का अनेक प्रकार से षडयन्त्र रच रहे थे। धन का प्रलोभन देकर तो निर्धनों को सरलता से ईसाई बनाया ही जा रहा था, साथ में धनाढय लोगों को अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से ईसाई मत में उनके स्वाभिमान को रखते हुए उन्हें ईसाई बनाने में कोई परेशानी नहीं आती थी। अपितु यह कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी कि अंग्रेज़ी शिक्षा से शिक्षित तत्कालीन धनाढय वर्ग स्वयं को अंग्रेज और अंग्रेजीयत का पैरोकार दिखाने में गौरवान्वित समझता था। उस समय में पराधीन भारतवर्ष में अधिकांश रूप में दो ही प्रकार की शिक्षण संस्थाएं हुआ करती थी-एक तो वे थी, जो राज्य सरकारों के द्वारा चलायी जा रही थी तथा दूसरी वे थी, जो ईसाइयों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप में अपने मत के प्रचारार्थ तथा प्रत्यक्ष रूप में शिक्षा देने हेतु संस्थापित एवं संचालित थी। किन्तु दोनों ही प्रकार की शिक्षण संस्थानों में कुछ समानताएं थीं। जैसे दोनों में ही उन्हीं अध्यापक वर्ग को सम्मान मिलता था, जो अंग्रेजी शिक्षा जानते थे। प्रिंसिपल के रूप में अधिकांशत: ईसाई अथवा ईसाई मत को स्वीकार करने वाले को रखा जाता था। उस समय के अंग्रेज प्रिंसिपल और पादरी लोग देश में ईसाई मत के प्रचार और प्रसार में तल्लीनता से लगे ही हुए थे, जो उच्चवर्ग के लोग थे, वे भी अच्छा सम्मान और अच्छी नौकरी पाने की इच्छा से अंग्रेजीयत के प्रसार में बढ़-चढ़ कर भाग लेकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हुए, इसके लिये भरपूर योगदान देते थे। कुछ नामधारी ब्राह्मणों ने वेद का ज्ञान और संस्कृतभाषा का अध्ययन-अध्यापन अति संकुचित करके अपने पास तक रखने का मानो ठेका ले लिया था, वे इस अन्धकूप से निकल नहीं सकते थे। सामान्य हिन्दूवर्ग की अपनी आजीविका की प्राप्ति और कपोलकल्पित धर्म तथा जाति को बचाने में ही पूरी शक्ति लगती जा रही थी।

यह संसार तो वस्तुत: एक रंगमंच है, जहाँ प्रत्येक जीव अपना-अपना अभिनय प्रस्तुत करता है और कुछ समय उपरान्त दर्शकों को अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत कर प्रस्थान कर जाता है। अन्तर मात्र इतना ही होता है कि कुछ अभिनयकर्त्ता अच्छा अभिनय करके दर्शकों के हृदय में आनन्द, सुख, समृद्धि, प्रसन्नता, न्याय, दया, धर्म, सुविचार, सेवा, राष्ट्रभक्ति, पितृभक्ति, वेदसेवा आदि शुभकर्मों की प्रेरणाएं दे जाते हैं और कुछ दूषित अभिनय से दु:ख, निन्दा, क्लेश, अधर्म, अन्याय, क्रूरता, दुर्विचार, कृतघ्नता आदि अशुभ-कर्मों से यातनाएं दे जाते हैं। दोनों में से कुछ को दर्शक लोग राम, कृष्ण, प्रह्लाद, दयानन्द, हनुमान, हरिश्चन्द्र, भगतसिंह आदि के नाम से याद करते हैं और कुछ को रावण, कंस, हिरण्यकशिपु, साण्डर्स के नाम से दुत्कारते हैं। समाज, सभ्यता, संस्कृति, भाषा, देश, परिवार और व्यक्ति को आगे ले जाने वाली यह महात्मा हंसराज रूपी अग्नि १५ नवम्बर १९३८ की रात्रि को ११ बजे शान्त हो गयी, उससे पूर्व वे लगभग २० दिवसों तक अस्वस्थ रहे। महात्मा हंसराज ने अपने गुरु देवर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित सन्मार्ग पर चलकर अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से शिक्षा के मन्दिर में डी०ए०वी० नाम से ऐसा दीप प्रज्वलित किया, जिससे सैंकड़ों ही नहीं, हजारों ही नहीं, अपितु करोड़ों दीप प्रज्वलित होते चले आ रहे हैं ; जिनसे समाज में शिक्षा का प्रकाश प्रकाशित होकर अन्धकार का विनाश स्वत: हो रहा है। संसार भर में जब तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से स्थापित उनके स्मृतिचिह्न डी०ए०वी० नामक शिक्षण संस्थाएं कार्य करेंगी, तब तक महात्मा हंसराज का नाम उनके त्याग और तपस्या के कारण सदा-सदा याद किया जाता रहेगा। ऐसे उस शिक्षाशास्त्री, धुन के धनी, महापरोपकारी, राष्ट्रीय-सन्त, देवदयानन्द के महान् शिष्य, महात्मा हंसराज को मैं उनके जन्मदिवस पर हृदय से उन्हें स्मरण करता हूँ और कामना करता हूं कि यह राष्ट्र सदा आगे बढ़े, उन्हीं महात्मा की तरह इस राष्ट्र में सैंकड़ों नवयुवक त्याग और तपस्या के दीप प्रज्वलित कर राष्ट्रसेवा में सहयोग प्रदान करें।

पृष्ठ 2 का शेष- सामवेद भाष्यकार.....

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के प्रबन्धक तथा कर्मचारियों ने भी फूलमालाओं से आचार्य जी को नमन किया।

नगर के विभिन्न राजमार्गों से होता हुआ यह जनसमूह अन्त में श्मशान भूमि में पहुंचा। पूर्व से सुसज्जित समिधाओं में आचार्य जी के पञ्चभौतिक-शरीर को चिता के मध्य स्थापित किया गया और समिधाओं का विधि-विधान पूर्वक चयन हुआ। आचार्य जी के परिवार की ओर से उनके पुत्र डॉ० विनोद कुमार विद्यालंकार तथा पौत्र स्वस्ति, गुरुकुल विश्वविद्यालय परिवार की ओर से कुलपति प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी तथा स्नातकों की ओर से प्रो० सत्यदेव निगमालंकार ने उन्हें मुखाग्नि प्रदान की। संस्कारविधि में उल्लिखित अन्त्येष्टि-संस्कार के मन्त्रों से कन्याओं ने गान किया तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने घृत और सामग्री से आहुतियां प्रदान कीं।

अगले दिन सांयकाल तीन बजे गुरुकुल के स्नातक आचार्य रामनाथ वेदालंकार को सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा प्रान्तीय प्रतिनिधिसभा पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, दिल्ली के प्रधान और मन्त्री तथा विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, वित्ताधिकारी तथा विभिन्न शिष्यों, भक्तों और प्रशंसकों ने उनकी श्रद्धाञ्जलि-सभा में भाग लिया।

वस्तुत: इस प्रकार के आचार्य जो त्याग और तपस्या के प्रतिमूर्त्ति थे, जिन्हें महात्मा मुंशीराम द्वारा बाल्यकाल में जीवन की उच्च शिक्षाएं दी गयी थी, जिनका जीवन बहुत सादा था एवं विचार बहुत ऊंचे थे, उनके जाने से न केवल आर्यसमाज का तथा न केवल गुरुकुल कांगड़ी का अपितु समस्त मानवजाति का नुकसान हुआ है। हम हृदय से उनका नन्दन, अभिनन्दन, श्रद्धाञ्जलि, पुष्पाञ्जलि भेंट करते हुए उनको प्रणाम करते हैं।

आर्य समाज अबोहर में मनाया गया महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिवस

आर्य समाज मंदिर अबोहर की पवित्र यज्ञशाला में आर्य समाज के संस्थापक युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 189वें जन्मदिवस बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

इस मौके पर समाज के पुरोहित पंडित जन्मजय शास्त्री जी द्वारा बृहद यज्ञ करवाया गया। इस यज्ञ के मुख्य यजमान श्री देवेन्द्र कुमार चैटले व श्रीमती स्वर्णकान्ता चैटले थे। साथ में आर्य समाज के सदस्यगण यज्ञाग्नि में घृत और सामग्री की आहुति डालकर दयानन्द जी के पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लिया। इस उपलक्ष्य में समाज की प्रचार मंत्री श्रीमती रेणू घोग जी ने स्वामी जी से संबंधित गीत सुनाया तथा प्रदीप गांधी जी ने विचार प्रकट किए।

इस अवसर पर समाज के सदस्यगण श्री केवल कृष्ण सेतिया, मुरारी लाल दावड़ा, सुरिन्द्र कुमार गिल्होत्रा, सत्यप्रकाश चुघ, संजीव सेतिया, श्रीमती सुशीला सेतिया, श्रीमती कंचन वाला, श्रीमती सुकेश मेहता, अशोक शर्मा, नितिन वधवा तथा समाज के समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे। **-आर्य समाज अबोहर**

आर्य समाज जीरा का वार्षिकोत्सव तथा गतिविधियां

आर्य समाज जीरा का 85वां वार्षिक उत्सव तिथि 22 अप्रैल से 28 अप्रैल 2013 को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक नारायण सिंह जी तथा उच्चकोटि के विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। यह उत्सव आर्य समाज जीरा के वरिष्ठ प्रधान ओम प्रकाश ग्रोवर की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। ऋषि बोध उत्सव 10 मार्च को तथा ऋषि का जन्म दिन 7 मार्च को मनाया गया था।

-पंडित किशोर कुणाल, पुरोहित आर्य समाज जीरा

ऋषि बोध पर्व व स्वामी दयानन्द जी का जन्म दिवस

गत दिवस आर्य समाज मन्दिर गुरदासपुर में ऋषि बोध पर्व मनाया गया। प्रधान ज्योति नंदा की अध्यक्षता में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों से आए विद्यार्थियों ने भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया।

इसके साथ ही विद्यार्थियों ने मधुर भजनों से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध किया। भाषण प्रतियोगिता में जिया लाल मित्तल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने प्रथम व डी० ए० जी० गर्ल्स स्कूल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। भजन में जिया लाल मित्तल डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी पार्थ ने पहला स्थान व डी० ए० वी० लड़कों के स्कूल का विद्यार्थी दूसरे स्थान पर रहा। देवेन्द्र नंदा प्रधान ने सभी आये हुए बच्चों व उपस्थित मुख्य अतिथि कपिल खोसला का धन्यवाद किया। मुख्य अतिथि को स्वामी दयानन्द का चित्र देकर सम्मानित किया गया व बच्चों को कापियां, पैन, स्मृति चिन्ह स्वामी दयानन्द के पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया। श्री जगदीश अरोड़ा, प्रोफैसर नारद जी, लाल चन्द सैनी, राम निवास शास्त्री जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। विजय मोदगिल व आर्य समाज की प्रधान ज्योति नन्दा ने बहुत ही सुन्दर भजन सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ ऋषि लंगर बांटा गया। इस अवसर पर मंत्राणी मोनिका, कैशियर सुलभा महाजन, मीनू दत्ता, रेणु वोहरा, निर्मल चौधरी, प्रेम अम्बा, मंजू, प्रभा जी, विजय मोदगिल, अजय मोदगिल, प्रिंसीपल रमेश जी, कैशियर नरेन्द्र नंदा जी, संजीव वोहरा, लाल चन्द सैनी, विजय वर्मा, जिया लाल मित्तल, अध्यापक सुदर्शन आदि उपस्थित थे।

-ज्योति नंदा (आर्य)

आवश्यकता

आर्य समाज मॉडल टाऊन, यमुना नगर (हरियाणा) में एक सेवक की आवश्यकता है। प्रार्थी पूरी तरह से शाकाहारी हो। आर्य समाज में ही सेवक के लिए रहने की व्यवस्था है। मासिक वेतन चार हजार रुपए है। सेवक शिक्षित व विवाहित और धार्मिक वृत्ति का होना चाहिए। सम्पर्क सूत्र : प्रधान रमेश पाहूजा, मोब. : 98969-20388

श्री सत्य प्रकाश उप्पल आर्य समाज मोगा के प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज मोगा का वार्षिक चुनाव दिनांक 14 अप्रैल 2013 को आर्य समाज के प्रांगण में प्रात: 9.30 बजे श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री सत्य प्रकाश उप्पल को भारी बहुमत से प्रधान पद के लिये निर्वाचित किया। श्री सत्य प्रकाश उप्पल का नाम प्रधान पद के लिये श्रीमती निर्मल शर्मा ने पेश किया जिसका अनुमोदन श्री पुरुषोत्तम राय, श्री विजय मदान, श्री सरदारी लाल कुमरा ने किया। दूसरी तरफ श्री मदन मोहन [illegible] का नाम श्री प्रियतम देव जी ने पेश किया जिसका अनुमोदन श्री दिनेश कुमार सूद ने किया। इस पर दो नाम प्रधान पद के लिये आने पर श्री सुरेन्द्र मोहन जी ने श्री सत्य प्रकाश उप्पल के समर्थन में हाथ खड़े करने के लिये कहा तो अधिक से अधिक सदस्यों ने हाथ खड़े करके उनका समर्थन किया। दूसरी तरफ जब श्री मदन मोहन तेजपाल जी के समर्थन में हाथ खड़े करने के लिये कहा गया तो उनके समर्थन में बहुत हीकम हाथ खड़े हुए। जिसके बाद श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी को भारी बहुमत से आर्य समाज मोगा का प्रधान निर्वाचित किया गया। एक अन्य प्रस्ताव में उन्हें आर्य समाज की 2013-14 के लिये कार्यकारिणी एवं दूसरे अधिकारियों के गठन करने का अधिकार भी दिया गया। इससे पूर्व आर्य समाज का आय-व्यय का ब्यौरा आर्य समाज के कोषाध्यक्ष श्री बलदेव बांसल जी ने पेश किया जिसकी सम्पुष्टि हुई। [illegible] प्रक्रिया शुरू होने पर आर्य समाज के प्रधान नरेन्द्र सूद जी ने अपनी कार्यकारिणी को भंग करने की घोषणा की। श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पर्यवेक्षक के रूप में मोगा पधारे थे। उनके साथ श्री ललित [illegible] आर्य सी.सै.स्कूल नवांशहर विशेष रूप से पधारे थे। **-सुरेन्द्र मोहन तेजपाल**

नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज नवांशहर में दिनांक 11-4-2013 को नव सवंत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री एवं आर्य समाज के प्रधान श्री प्रेम भारद्वाज जी की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के द्वारा किया गया। [illegible] शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा नव संवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात् श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सभी को नव संवत की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा [illegible] हमारे लिए विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि इसी [illegible] सरस्वती [illegible] आर्य समाज की स्थापना [illegible] ने नारी जाति के कल्याण [illegible] जाति बंधन को तोड़ने के लिए [illegible] हम कभी नहीं उतार सकते। उनके [illegible] दिखाए गए मार्ग पर चलकर आगे [illegible] अपना योगदान देते हैं तभी हम [illegible] हो सकते हैं। इस अवसर पर सर्वश्री विनोद भारद्वाज, बरिंदर सरीन, सतीश बरूटा, ललित शर्मा, अरुणेश शर्मा, प्रिंसीपल एस.के बरौलिया, कांता सिंह, सुरिन्द्र मोहन तेजपाल, एडवोकेट [illegible] शर्मा, आर. एस. गिल, विकास तेजी, कुलवंत राय शर्मा, [illegible], सुरिंदर त्रिपाठी, सतीश शर्मा, शक्ति शर्मा उपस्थित थे। **-अरविंद नारद प्रचार मंत्री**

आर्य समाज गांधी नगर-1 का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर का वार्षिक उत्सव एवं आर्य समाज स्थापना दिवस 22 अप्रैल से 28 अप्रैल 2013 तक बड़ी धूमधाम और श्रद्धा से मनाया जा रहा है। 22 अप्रैल से 27 अप्रैल तक प्रतिदिन सायं 7.00 बजे से 10 बजे तक पारिवारिक सत्संग होंगे। 28 अप्रैल को प्रात: 8.00 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक मुख्य समारोह होगा। इस उत्सव में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री के वेदों पर प्रवचन होंगे जबकि श्री अरुण कुमार जी विद्यालंकार के मधुर भजन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह समय पर पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

-ईश्वर दास सपरा कोषाध्यक्ष

राजस्थान के नवनियुक्त आर्य परिवार के रत्न लोकायुक्त : श्री सज्जन सिंह कोठारी शील एवं सौजन्य के प्रतिमान

- ले० डॉ० भवानीलाल भारतीय, 3/5 शंकर कालोनी, श्री गंगानगर

राजस्थान के नवनियुक्त लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी आर्यों के चिरन्तन आदर्शों की प्रतिमूर्ति हैं। शील, सौजन्य तथा शिष्टाचार गुण सम्पन्न श्री कोठारी जी का जन्म तथा प्रशिक्षण आर्य परम्पराओं के अनुसार हुआ है। अजमेर जिले के अन्तर्गत मसूदा की जमींदारी प्रसिद्ध हैं। वहां के प्रशासन राव बहादुर सिंह के शासन काल में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द का आगमन 1881 ई० में हुआ था। उस समय स्वामी जी के प्रेरणाप्रद उपदेशों को ग्रहण कर जिन लोगों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी उनमें अनेक जैन परिवार भी थे। इन्हीं में से एक कोठारी परिवार भी था। आपके पिता श्री धर्मसिंह कोठारी की शिक्षा-दीक्षा स्वामी दयानन्द निर्दिष्ट शिक्षा पद्धति से हुई। हिन्दी, संस्कृत आदि के सुचारू ज्ञान के साथ-साथ आपने लाहौर के विख्यात डी. ए. वी. कॉलेज के आयुर्वेद विभाग में उस समय प्रवेश लिया जब महात्मा हंसराज जैसे मनस्वी पुरुष कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष थे। आपने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की संशोधित प्रति तैयार की।

श्री सज्जन सिंह कोठारी इन्हीं धर्म सिंह जी के तृतीय सुपुत्र हैं। आपके अग्रज उच्च शिक्षा विभाग से सेवा निवृत्त हुए हैं। दूसरे भ्राता श्री सुदर्शन व्यवहार प्रबन्धन से सम्बन्ध रहे। सज्जन सिंह जी की उच्च शिक्षा अजमेर के गवर्नमेंट कॉलेज में हुई जो अपनी परम्पराओं तथा छात्रों के समक्ष उच्च लक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए विख्यात है। यह एक सुखद प्रसंग रहा कि श्री कोठारी बी. ए. तृतीय वर्ष में मेरे भी विद्यार्थी रहे जब मैं उक्त कॉलेज में हिन्दी का प्रवक्ता था।

कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने राजस्थान की न्यायिक सेवा परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की तथा अजमेर में मैजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हुए। आपकी प्रशासनिक योग्यता, लगन तथा कर्त्तव्य भावना निरन्तर विकसित होती गई और आप उत्तरोत्तर अपने विभाग में उन्नति के उच्चतर स्तरों पर अभिषिक्त होते रहे। कालान्तर में जब आप कोटा में वाहन विभाग में न्यायाधीश पद पर रहे तो वहां की सामाजिक प्रवृत्तियों में निरन्तर भाग लेते रहे। उन्हीं दिनों आपसे पुनः सम्पर्क करने का अवसर मिला। राजस्थान के अनेक नगरों में सत्र न्यायाधीश तथा अन्य उच्च पदों पर कार्य करने के पश्चात् आप राजस्थान सचिवालय में विधि तथा न्याय विभाग में सचिव जैसे दायित्व पूर्ण पद पर भी रहे। ततपश्चात् आप राजस्थान हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीश के पद पर कार्यरत रहे। हाई कोर्ट की जयपुर बेंच में आपका यशस्वी कार्यकाल रहा।

ऐसे समर्पित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की लोकायुक्त पद पर नियुक्ति राज्य के लिए सर्वथा शुभ तथा मंगलकारक है। आशा है न्यायमूर्ति कोठारी लोकायुक्त के गरिमापूर्ण पद पर रह कर जन सेवा के नए प्रतिमान उपस्थित करेंगे।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।